3 विविधता का प्रत्यय
[CONCEPT OF DIVERSITY]

भारतवर्ष एक बहुलतायुक्त समाज है। यह एक ऐसा महान देश है जिसके अंचल में अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदाय साथ-साथ रहते हैं। यहाँ अनेक धर्म, संस्कृति, भाषा और प्रजाति के लोग निवास करते हैं। राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी अनेक विविधताएँ यहाँ देखने को मिलती हैं। हिन्दू, बौद्ध, जैन, इस्लाम, ईसाई, सिख आदि सभी धर्मों के लोग यहाँ पर रहते हैं। भारत में ही अनेक संस्कृतियाँ, जैसे—सुमेरियत, असीरियन, बेबीलोनियन, मिस्र, ईरान, यूनान और रोम आदि आयीं। अनेक प्रजातियाँ, जैसे—आर्य, अनार्य, हूण, शक, पुर्तगाली और फ्रांसीसी आदि यहाँ आयीं। भौगोलिक दृष्टि से भी भारत एक बहुआयामी देश है। यहाँ के लोगों के रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज और सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक व्यवस्था में विविधता दिखाई देती है।

भारत एक संगठित राष्ट्र है जिसका अपना एक संविधान है जिसमें सभी धर्मों, संस्कृतियों, भाषाओं और क्षेत्रीय लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान सुरक्षित है। उनके हितों का ध्यान रखा जाता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि भारतीय सामाजिक जीवन के अति प्राचीन काल के इतिहास से ही विकसित भारतीय संस्कृति विविधता में एकता का अनूठा रूप और आदर्श रूप प्रस्तुत करती रही है। इसे हम **विविधता** का नाम दे सकते हैं। इस विविधता ने भी भारतीय संस्कृति में एक अभूतपूर्व एकता स्थापित की है। अब हम इन्हीं विविध भिन्नताओं के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

धर्म के आधार पर विविधता
(DIVERSITY ON THE BASIS OF RELIGION)

भारतीय समाज और जनजीवन में धार्मिक विविधता भी बहुत है। विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी भारत में रहते हैं और अपनी धार्मिक विशेषताओं को कायम करने का प्रयास करते रहे हैं। इसी कारण यह समाज धर्म की दृष्टि से अनेक वर्गों में विभिक्त होता गया। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत सात धर्म माने गये हैं—हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन व अन्य धर्म। इन धर्मों को मानने वाले लोगों का प्रतिशत 1991 व 2001 की जनगणना के अनुसार अग्रवत् है—

धार्मिक समूह	जनसंख्या प्रतिशत 1991	जनसंख्या प्रतिशत 2001
हिन्दू	81.53%	80.46%
मुस्लिम	12.61%	13.43%

Scanned with CamScanner

		2.34%
ईसाई	2.32%	1.87%
सिक्ख	1.94%	0.77%
बौद्ध	0.77%	0.41%
जैन	0.40%	0.06%
पारसी	0.08%	0.72%
अन्य	0.44%	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म को मानने वालों की संख्या अन्य धर्मों को मानने वालों की तुलना में अत्यधिक है। हिन्दू धर्म में अनेक देवी-देवताओं की आराधना, धार्मिक उत्सव, दान यज्ञ, व्रत व तीर्थयात्रा आदि का विशेष महत्त्व है। हिन्दू प्रमुख रूप से शैव, वैष्णव, शाक्त और स्मार्त के रूप में विभक्त है जो शिव, विष्णु और देवी के उपासक हैं। इनमें भी अनेक उपशाखाएँ हैं जो अनेक मतों, धार्मिक अनुष्ठानों के सिद्धान्त पर भिन्न-भिन्न हैं। हिन्दूवाद में विभिन्न मठ और पंथ हैं जो हिन्दू धर्म को जटिल बनाते हैं, जैसे—कबीरपंथी, सतनामी और लिंगायत हैं जो अलग-अलग धर्म का दावा करते हैं। इसी प्रकार **वैष्णव सम्प्रदाय** मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग मुख्य रूप से मानता है—कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग। कर्म मार्ग में कर्मकाण्ड और यज्ञ आदि की विधियों का उल्लेख किया गया है। ज्ञान मार्ग में ज्ञान प्राप्ति को मोक्ष का माध्यम बनाया गया है। **शैव सम्प्रदाय** में शिव को परमात्मा माना गया है और कहा गया है कि शंकर वैदिक देवता रुद्र ही हैं और अनादिकाल से आर्यों के देवता हैं। शंकर तथा रुद्र वस्तुतः अमित देवता के ही रूप हैं। **शाक्त सम्प्रदाय** में मातृदेवी की पूजा का प्रचलन है। बिना शक्ति के शिव शव के समान है। शक्ति को उसके कल्याणकारी रूप में उमा, दुर्गा, भवानी, अन्नपूर्णा आदि नाम से जाना जाता था। शक्ति की पूजा सबसे अधिक बंगाल में आज भी होती है। बंगालियों की इष्टदेवी भी दुर्गा ही है। पूर्वी भारत में भी शक्ति पूजा बहुत लोकप्रिय है।

भारतीय मुसलमान दो सम्प्रदायों में बँटे हैं—शिया और सुन्नी। शिया ईरान के बाहर सबसे बड़े समूह में भारत में है, वैसे सुन्नी की तुलना में इनकी संख्या कम है। भारत के सुन्नी हनीफी सम्प्रदाय को मानते हैं जो मुस्लिम कानून के चार सम्प्रदायों में से एक है। दक्षिण में विशेष रूप से मापिला और लक्षद्वीप टापू में शफी सम्प्रदाय को माना जाता है। गुजरात के सुन्नी माल्लकी सम्प्रदाय को मानते हैं। चौथा सम्प्रदाय हनवाली भारत में नहीं माना जाता। शियाओं का अपना स्वयं का एक सम्प्रदाय है। ये बारह इमामों में विभाजित हैं जो सात इमामों के अनुयायी हैं।

भारत के ईसाई रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट दो भागों में विभाजित हैं। ईसाई और मुसलमानों में यद्यपि स्पष्ट वर्ण विभाजन नहीं है, किन्तु इनमें उच्च जाति और निम्न जाति धर्म परिवर्तन के कारण अन्तर को मानती है। उच्च जाति वाले स्वयं को ब्राह्मण, ईसाई, नायर ईसाई अथवा राजपूत या त्यागी मुसलमान कहते हैं। अनुसूचित ईसाई जाति धर्म परिवर्तन के बाद भी सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी है।

सिक्ख धर्म के अनुसार सिक्खों के दशम गुरु श्री गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही इस पंथ का निर्माण किया था। सिक्खों के पाँच ककार कंघा, केश, कच्छा, कृपाण और कड़ा भी इन्होंने ही प्रचलित किये थे। सन्त गुरु नानकदेव को इस पंथ का संस्थापक माना जाता है। गुरु गोविन्दसिंह स्वयं भी कवि थे और शान्तिस्वरूपा माँ दुर्गा के उपासक थे। सिक्ख धर्म में कुल 10 गुरु हुए हैं—1. गुरु नानकदेव, 2. गुरु अंगददेव, 3. गुरु अमरदास, 4. गुरु रामदास, 5. गुरु अर्जुनदेव, 6. गुरु हरगोविन्द, 3. गुरु हरिराय, 8. गुरु हरिकिशन, 9. गुरु तेगबहादुर और 10. गुरु गोविन्दसिंह।

Scanned with CamScanner

सिक्ख धर्म एकेश्वरवादी धर्म है, जिसमें एक ही ईश्वर को परम सत्ता माना गया है। यह धर्म कर्म में आस्था रखता है तथा इसके अनुसार मुक्ति का अर्थ मनुष्य का ईश्वर से साक्षात्कार है। 'गुरुग्रन्थ साहिब' में मुक्ति मार्ग का वर्णन गुरु नानकदेव द्वारा किया गया है तथा पाँच खण्डों—धर्म खण्ड, ज्ञान खण्ड, शरण खण्ड, कर्म खण्ड व सुच खण्ड का वर्णन है। इस प्रकार सिक्ख धर्म गुरु के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त करता है तथा आदिग्रन्थ 'गुरुग्रन्थ साहिब' को गुरु का स्थान देता है। इस प्रकार इस धर्म में गुरु के शारीरिक रूप को महत्त्व न देकर आध्यात्मिक स्वरूप को सम्मान दिया गया है। गुरु नानकदेव के आध्यात्मिक उपदेशों से प्रारम्भ यह धर्म समय आने पर 'खालसा' सैनिक संगठन में बदल गया था और देश की अखण्डता के लिए आक्रमणकारियों के विरुद्ध प्राणों का बलिदान करने में भी पीछे नहीं रहा।

बौद्ध धर्म पहले भारत में पर्याप्त रूप से फैला था, किन्तु वैदिक हिन्दूवाद के बाद यह कुछ स्तरों तक ही सीमित हो गया। अम्बेडकर ने इसे पुनः जाग्रत किया, किन्तु इसके अनुयायी विशेष रूप से माहर जाति के, अपनी परिस्थिति को नहीं सुधार पाये। बाद में बौद्ध धर्म—हीनयान व महायान—दो भागों में विभक्त हो गया। बौद्ध धर्म **अनात्मवाद** (The doctrine of no-self) के सिद्धान्त में विश्वास करता है। जब विश्व की प्रत्येक वस्तु क्षणिक है तो चिरस्थायी सत्ता के रूप में आत्मा को मानना भूल है। बौद्ध धर्म के अनुसार आत्मा पाँच स्कन्धों—रूप, संज्ञा, वेदना, संस्कार और विज्ञान या चेतना का योग है और ये पाँचों स्कन्ध अनित्य हैं, क्षणिक हैं और सतत् परिवर्तनशील हैं। इसी प्रकार बौद्ध धर्म **क्षणिकवाद** (The Doctrine of momentariness) पर भी विश्वास करता है जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षणमात्र के लिए ही रहता है। संसार की प्रत्येक वस्तु केवल अनित्य ही नहीं है वरन् क्षणभंगुर भी है। जिस प्रकार नदी की एक बूँद एक क्षण के लिए सामने आती है, परन्तु दूसरे ही क्षण विलीन हो जाती है उसी प्रकार इस संसार की समस्त वस्तुएँ क्षणमात्र के लिए ही अपना अस्तित्व कायम रखती हैं।

जैन धर्म से अभिप्राय 'जिन' द्वारा प्रणीत धर्म से है। जिस प्रकार विष्णु के अनुयायी 'वैष्णव' और शिव के उपासक 'शैव' कहलाते हैं उसी प्रकार 'जिन' के उपदेशों को मानने वाले जैन तथा उनके धर्म को जैन धर्म कहा जाता है। 'जिन' का अर्थ है—जीतने वाला अर्थात् जिसने राग-द्वेष आदि अपने आत्म-विकारों पर विजय प्राप्त कर ली हो।

जैन धर्म किसी समय भारत में बहुत फैला हुआ था, किन्तु आज उसके अनुयायी बहुत कम हैं और दक्षिण राज्यों में रहते हैं। इसके दो प्रमुख विभाग हैं—(1) दिगम्बर (निर्वस्त्र) और (2) श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्रधारी)। दार्शनिक दृष्टि से जैन धर्म यथार्थवादी, सापेक्षवादी व अनेकान्तवादी है। यह आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है और भौतिकवादी दृष्टिकोण से परहेज करता है। जैन धर्म यह भी स्वीकार करता है कि आत्मानुभूति (Self-realization) केवल त्याग के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

पारसी एक लघु समुदाय है। भारत में इनका आगमन 8वीं शताब्दी में पर्सिया से हुआ और ये भारत की जनसंख्या में घुलमिल गये। भारत में इनकी जनसंख्या के आकार की तुलना में योगदान अधिक रहा है। धार्मिक कृत्यों के लिए इन्होंने अपने क्षेत्र के व्यापारी समुदायों की जीवन शैली को अपनाया है। ये वंशानुगत पुरोहित अपनों में ही विवाह करते हैं।

इस धर्म के संस्थापक जरथुस्त्र (Zarathustra) थे। यह धर्म भी वैदिक धर्म की भाँति प्राचीन धर्म है। कुछ विद्वानों के अनुसार महात्मा जरथुस्त्र का जन्म ईसा से 5000 वर्ष पूर्व हुआ था। किसी जमाने में इसका प्रचार मिस्र, रोमन साम्राज्य और ब्रिटेन तक था। भारत की दृष्टि से देखा जाये तो इस धर्म का बहुत महत्त्व है, क्योंकि इस धर्म के इतिहास और वैदिक धर्म के इतिहास से पता चलता है कि ये दोनों मौलिक रूप से आर्य कबीले थे। किसी कारणवश इनमें मतभेद हुआ और ये अलग हो गये। ऋग्वेद और

Scanned with CamScanner

इसकी सांस्कृतिक विविधताओं की अभिव्यक्ति है। भारत में सांस्कृतिक विविधताएँ—धर्म, वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन, संगीत, नृत्य, लोकगीत, विवाह प्रणाली व जीवन संस्कार आदि अनेक क्षेत्रों में दिखाई देती है। महानगरों में पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है तो ग्रामीण जीवन की भी अपनी ही भारतीय संस्कृति है। अनेक धर्मानुयायी यहाँ विद्यमान हैं। इन सबकी अलग-अलग प्रथाएँ, रुचियाँ व इच्छाएँ हैं। मत-मतान्तरों की विविधता भी उनकी संस्कृति को प्रभावित करती है। कुछ जातियों, समुदायों और सम्प्रदायों के व्यक्तिगत लोकाचार हैं जिनका क्षेत्र की जनसंख्या के तत्त्वों से सावयवी सम्बन्ध रहता है तथा जिसके अनुसार किसी समाज का सांस्कृतिक व्यक्तित्व भी विकसित होता रहता है। **उदाहरणार्थ**—भारत अनेक भूखण्डों में विभाजित है व प्रत्येक भूभाग की अपनी एक विशेषता है। प्रत्येक प्रदेश की अपनी संस्कृति है, जैसे मध्य प्रदेश की नगरीय संस्कृति की विशेषता जनजातियों के क्षेत्र से बिल्कुल भिन्न है, जबकि दोनों एक ही राज्य के निवासी हैं। परन्तु इनके रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, बोली, व्यवहार, रीति-रिवाज आदि में विविधतायें सरलता से देखी जा सकती हैं। इसी प्रकार सांस्कृतिक विविधता के अन्तर्गत समाज में भिन्नता आने का कारण धार्मिक विश्वासों की विविधतायें, जातीय संरचना व सांस्कृतिक विविधतायें आदि भी होती हैं।

Scanned with CamScanner